मुट्ठी भर हिमालय

(गीत-ग़ज़ल-संग्रह)

नित्यानन्द वाजपेयी “उपमन्यु”

अर्णव प्रकाशन
E-mail-arnavpublication@gmail.com
Website- www.arnavpublication.com
Mobile-700010354

अर्णव प्रकाशन

मुख्य कार्यालय- एस.पी.बंगले के पीछे वार्ड नंबर-14
शहडोल (मध्यप्रदेश) 4840001
शाखा कार्यालय- महाराणा प्रताप चौक,बिलासपुर (छत्तीसगढ़) 495001
मोबाइल नंबर**- 7000103541**
ई-मेल**- arnvpublication@gmail.Com**
वेबसाइट**- www.arnavpublication.com**
प्रथम संस्करण- 2021

सर्वाधिकार सुरक्षित- श्री नित्यानन्द वाजपेयी “उपमन्यु” (रचनाकार) एवं प्रकाशक “अर्णव प्रकाशन” की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके किसी भी भाग को संक्षिप्त परिवर्तित कर प्रकाशित करना या फिल्म बनाना या किसी अन्य प्रकार से उपयोग करना कानूनन अपराध है ।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री के लिए लेखक पूरी तरह से स्वयं जिम्मेदार और उत्तरदायी हैं, इस पुस्तक में प्रयुक्त कथनों, सूचनाओं, विचारों, अभ्यावेदन, विवरणों, उदाहरणों और संदर्भों आदि के लिए भी लेखक पूरी तरह से स्वयं जिम्मेदार और उत्तरदायी हैं । प्रकाशक या सम्पादक किसी भी तरह से इस पुस्तक की विषयवस्तु या विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते ।

ISBN –
प्रूफ रीडिंग/आकल्पन- अर्णव प्रकाशन टीम द्वारा
आवरण पृष्ठ-
पुस्तक का मूल्य-
मुद्रक- आर.एच. प्रिंटर्स दिल्ली

मेरा यह ग़ज़ल संग्रह समर्पित है ---

अनुक्रमणिका

विवरण		पृष्ठ क्र0
भमिका		
आशीर्वाद		
शायर की कलम से		
जीवन परिचय		
क्र.		
1		
2		
3		
4		
5		

जीवन परिचय

नाम- नित्यानन्द वाजपेयी “उपमन्यु” ।
जन्म तिथि- 30 जुलाई 1982 ।
पिता का नाम- भगवद्विग्रह श्री जय जय राम वाजपेयी ।
माता का नाम- श्रीमती अनु आत्मजा वाजपेयी ।
शैक्षणिक योग्यता- स्नातकोत्तर (संस्कृत साहित्य), डिप्लोमा इन मानव संसाधन विकास, पी. जी. डिप्लोमा इन मानव संसाधन प्रबन्धन ।
संप्रति- सनातनी छन्दाधारित/ उर्दू बह्र आधारित लेखन (21 वर्ष का सैन्य प्रशासकीय अनुभव)।
अभिरुचि- पर्वतारोहण, साहित्य लेखन, नाट्य-मंचन ,गीत-संगीत, यात्रा आदि में रुचि ।

<u>प्रकाशन</u>-
(1) “शस्त्र से शास्त्र” एकल काव्य संग्रह प्रकाशित ।
(2) अर्णव प्रकाशन से प्रकाशित साझा काव्य संकलन 'स्नेह-अनुबंध' एवं “पांच्यजन्य काव्य प्रसून” में कविताएँ प्रकाशित (2020) ।

<u>संपादन</u>- “पांच्यजन्य काव्य प्रसून” साझा काव्य संकलन का संपादन ।

<u>सम्मान</u>-
(1) अर्णव प्रकाशन द्वारा 'काव्य श्री अर्णव सम्मान' से सम्म्मानित ।
(2) “रचनाकार दिल्ली” साहित्यिक समूह द्वारा सर्वश्रेष्ठ रचनाकार के सम्मान' से सम्म्मानित ।
(3) “रचनाकार दिल्ली” साहित्यिक समूह द्वारा सर्वश्रेष्ठ संचालक के सम्मान' से सम्म्मानित ।
(4) कई साहित्यिक पटल द्वारा सम्मानित ।

<u>साहित्यिक उपलब्धियाँ</u>-
(1) गीता रामायण परीक्षा समिति पौढ़ी गढ़वाल, द्वारा आयोजित प्रवेशिका परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्रमाण-पत्र
(2) साहित्य कलश प्रकाशन पटियाला, द्वारा प्रकाशित शून्य से शिखर में कविताएँ प्रकाशित ।
(3) आदर्श रामलीला समिति, भरखनी, हरदोई द्वारा सर्वोत्कृष्ट पात्र निर्वहन एवमं मंच संचालन के लिए प्रशंसा-पत्र ।

<u>साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ाव</u>-
(1) गीता श्री साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश जनपद अध्यक्ष हरदोई,फर्रुखाबाद पर पदस्थ ।
(2) लेखनी परिवार, उड़ान समूह, छन्द प्रवाह, शब्द वन्दना आदि सोशल मीडिया साहित्यिक पटलों पर कार्यरत ।

(3) **पांच्यजन्य** काव्यप्रसून व्हाट्सएप्प साहित्यिक पटल के संस्थापक एवं प्रबन्धन/संचालन समिति प्रमुख।

विशेष- छन्दबद्ध काव्य, मुक्तक, चतुष्पदी, षटपदी, सभी सनातनी छन्दों पर हस्त सिद्ध, उर्दू ग़ज़ल, हिन्दी गीतिका सृजन।
स्थाई पता- गीता विहार कॉलोनी, पाञ्चालघाट गंगा धाम, फर्रूखाबाद (उ.प्र.) 209601

🌻---------🌻

शैलजा वन्दन

शम्भु विलासिनि, हे गिरि वासिनि, शत्रुविनाशिनि, जगदम्बे।
जय जय हे !, मधुकैटभ नाशिनि,भक्तोल्लासिनि, श्री अम्बे ।।

गिरि गृह शोभित, त्रिभुवन लोभित, सिंह सुशोभित,दैत्य हते।
युद्ध प्रवीणित, कटि कर क्षीणित, मधुमय वीणित, बुद्धि मते ।।
वेद प्रकाशिनि, गीत प्रभाषिनि, हे कमलासिनि, जगदम्बे।
जय जय हे !, मधुकैटभ नाशिनि, भक्तोल्लासिनि, श्री अम्बे ।।

शक्ति स्वरूपा,अनुपम रूपा,जयति अनूपा,शम्भु प्रिया।
विश्व सुजाता,हे ! जग त्राता, पयमृत दाता,रूप त्रिया ।।
तृषा पिपासिनि, युग अट्टहासिनि, दितिसुत त्राषिनि,जगदम्बे।
जय जय हे !, मधुकैटभ नाशिनि, भक्तोल्लासिनि, श्री अम्बे ।।

जय उपवासिनि,वारि बतासिनि,शोक विनाशिनि, शम्भु रते ।
जय कैलाशिनि,विजन निवासिनि, दैत्य हुताशिनि,दुष्ट क्षते ।।
दल संहारिणि, असुर विदारिणि, जगत उधारिणि, जगदम्बे ।
जय जय हे !, मधुकैटभ नाशिनि, भक्तोल्लासिनि, श्री अम्बे ।।

अतुल्य प्रबल्य, प्रभा समतुल्य, असुर दल शल्य, महान तुम्हीं ।
शूल प्रहारिनि, सैन्य विदारिनि, दैत्य दुखोधि कृपाण तुम्हीं ।।
काल प्रभाषिनि, श्रोणित प्राशिनि, केहरि हासिनि, जगदम्बे ।
जय जय हे !, मधुकैटभ नाशिनि, भक्तोल्लासिनि, श्री अम्बे ।।

विकार विखण्ड, हने दुष्चण्ड, प्रगल्भ प्रचण्ड , शिरोधि करे ।
हनि बहु दण्ड, विकल करि मुण्ड, रुधिर करि कुण्ड, पयोधि भरे ।।
श्रोणित पोषिणि, सुर दुख मोषिणि, जय शिव तोषिणि, जगदम्बे ।
जय जय हे !, मधुकैटभ नाशिनि, भक्तोल्लासिनि, श्री अम्बे ।।

दया प्रकारिणि, मन दुख हारिणि,कीर्ति प्रसारिणि, ध्यान धरूँ ।
निज कर्मों में, मन मर्मों में, सद्धर्मों में, प्राण भरूँ ।।
सिंह सवारिणि,भव भय तारिणि, दुर्गति हारिणि, जगदम्बे ।
जय जय हे !, मधुकैटभ नाशिनि, भक्तोल्लासिनि, श्री अम्बे ।।

🌻---------🌻

भजन

श्री राम नाम मंत्र उचारा करो सखे ।
सब काम क्रोध मोह निवारा करो सखे ।।

है जीव ब्रह्म अंश सदा सत्य है यही ।
पितु मातु बन्धु पुत्र मधुर भृत्य है यही ।।
दृष्टान्त बर्फ नीर विचारा करो सखे ।
श्री राम नाम मंत्र उचारा करो सखे ।।

ब्रह्माण्ड में अनेक दिखें रूप एक के ।
परछाईयाँ दिखें कि मिलें बिम्ब एक के ।।
सबको समान मान सँवारा करो सखे ।
श्री राम नाम मंत्र उचारा करो सखे ।।

संसार झूठ नींव खड़ा जानिये इसे ।
व्यापार है असत न खरा मानिये इसे ।।
प्रण गर्भ में किया न बिसारा करो सखे ।
श्री राम नाम मंत्र उचारा करो सखे ।।

गुरु मातु पित्र पुण्य चरण धूलि माथ ले ।
सत्कर्म सौम्य भाव सुधा कुम्भ हाथ ले ।।
दुर्बल व दीन हीन उबारा करो सखे ।
श्री राम नाम मंत्र उचारा करो सखे ।।

🌻---------🌻

हनुमत विनय

सुजान बजरंग वीर न्यारे, बिना तुम्हारे न है सहारा ।।
अघी दरिद्री विपन्न पीड़ित, व दीन दुर्बल दुखी बेचारा ।।

जो आपकी आ गया शरण में, उसे सदा ही उबारते हो ।
सदैव श्रीराम के सुसेवक, सुकाज प्रभु के सँवारते हो ।।
सुकंठ के मीत हे ! कीश नेता, है आसरा बस हमें तुम्हारा ।
सुजान बजरंग वीर न्यारे, बिना तुम्हारे न है सहारा ।।

सुभक्त हो राम के तुम्हीं तो, पवन तनय केसरी दुलारे ।

हो नाव जगत समुद्र हेतु तुम ही, जपा तुम्हें तब लगे किनारे ।।
अतुल्य हो बलसीव केसरी सुत, तुम्हें नमन है सदा हमारा ।
सुजान बजरंग वीर न्यारे, बिना तुम्हारे न है सहारा ।।

समुद्र को लाँघ सीय सुधि ला, जला महल सुवर्ण का दिया था ।
दशाननी घृत तेल वस्त्र से ही, नगर उसी का जला दिया था ।।
कपीश ! तुम सा न था प्रबन्धक, न है न होगा अमोघ न्यारा ।
सुजान बजरंग वीर न्यारे, बिना तुम्हारे न है सहारा ।।

🌻---------🌻

गुज़ारिश

कहीं निग़ाहें कहीं निशाना, ये आप क्यों आजमा रहे हैं ।
किसे सुहाने फ़लक बिठाना, न जाने किसको बिठा रहे हैं ।

बहुत पुरानी हुई मुहब्बत, नयी रवायत चलाओ भी अब ।
रुकी-रुकी ज़िंदगी हमारी, हम उम्र भर से निभा रहे हैं ।।
कहीं निग़ाहें कहीं निशाना, ये आप क्यों आज़मा रहे हैं ।

न जाओ साक़ी तुम अब कहीं भी, अजीब हुश्न की तिश्नगी है ।
यहाँ तड़प के हरेक जख़्मी, तुम्हें ही जानां बुला रहे हैं ।।
कहीं निग़ाहें कहीं निशाना, ये आप क्यों आज़मा रहे हैं ।

अजी मुक़द्दर नशीन हो तुम, हमारे दिल में मिली जग़ह जो ।
अजीब मीठा सा दर्द दिल में, कई युगों से उठा रहे हैं ।।
कहीं निग़ाहें कहीं निशाना ,ये आप क्यों आज़मा रहे हैं ।

बहुत भुलाया तुम्हें क़सम से, अभी तलक़ भी भुला न पाये ।
मुझे पता है न आओगे तुम, फ़क़त दिलों में सज़ा रहे हैं ।।
कहीं निग़ाहें कहीं निशाना, ये आप क्यों आज़मा रहे हैं ।

अभी लबों पर है प्यास मेरे, बदस्तूर तुम बुझाओगे कब ।
बहुत करम साक़िया है अब तो, जो मैक़दे में बिठा रहे हैं ।।
कहीं निग़ाहें कहीं निशाना, ये आप क्यों आज़मा रहे हैं ।

🌻---------🌻

इक़रार

है प्यार अगर तुमको इन्कार नहीं करना ।
अब और मुझे दिलबर बेज़ार नहीं करना ।।

है प्यार अजब दौलत बढ़ती है लुटाने से ।
यह लत है अनोखी इक मिटती न मिटाने से ।।
वीरान मेरी रातें अब यार नहीं करना ।
है प्यार अगर तुमको इन्कार नहीं करना ।।

तुम लाख करो कोशिश जज़्बात बता देंगे ।
ये गाल गुलाबों से हर बात बता देंगे ।।
बेबाक़ जवानी पे ऐतबार नहीं करना ।
है प्यार अगर तुमको इन्कार नहीं करना ।।

हम चाह तुम्हारी हैं तुम चाह हमारी हो ।
वह काम करें मिलकर भई वाह हमारी हो ।।
बेखौफ़ हुए ग़र अब दिल ज़ार नहीं करना ।
है प्यार अगर तुमको इन्कार नहीं करना ।।

मुद्दत से तुम्हें पाने की आस लगाए हैं ।
यह मूर्ति मेरे दिल में हम कब से बसाए हैं ।।
है आज मिलन अपना तक़रार नहीं करना ।
है प्यार अगर तुमको इन्कार नहीं करना ।।

🌻---------🌻

बहारें

हूँ आप का नसीब ज़रा पास आइये ।
ऐसे न रूठिये न अभी दूर जाइये ।।

दिन आज का हसीन बड़ा आप साथ हैं ।

ये गुल नशे में चूम रहे सुर्ख़ हाथ हैं ।।
मौसम पुकारता है मधुर गीत गाइये ।
ऐसे न रूठिये न अभी दूर जाइये ।।

मुद्दत से शाम आज ये रंगीन हो रही ।
फिर क्यों नज़र हुज़ूर कि ग़मगीन हो रही ।।
क्या है अजीब राज़ हमें भी सुनाइये ।
ऐसे न रूठिये न अभी दूर जाइये ।।

बेज़ार वो कली जो खिली फूल है बनी ।
है ओस की हसीन फ़िज़ा रंग में सनी ।।
अब रूठ बैठिये न दिले दर्द पाइये ।
ऐसे न रूठिये न अभी दूर जाइये ।।

हम हैं हबीब आप फ़क़त नम्र हो हमें ।
क्यों काँपते गुलाब से लब सुर्ख़ हैं थमें ।।
मत रोकिये इन्हें क़रीब और लाइये ।
ऐसे न रूठिये न अभी दूर जाइये ।।
🌻---------🌻

विरह व्यथा

पवन पुरवा सुहानी हाय ! तू मुझको सताती है ।
विरहिणी हूँ मुझे रह-रह पिया की याद आती है ।।

बहुत दिन से हमारे मीत का संदेश लाया वो ।
पपीहा तू बड़ा पापी नहीं तूने सुनाया वो ।।
इधर कोयल मधुर कुहुके हमारा मन दुखाती है ।
पवन पुरवा सुहानी हाय ! तू मुझको सताती है ।

बसन्ती ये बहारें खिल उठी मुझको चिढ़ाने को ।
मधुप भी पुष्प पर फिरते विरह पीड़ा बढ़ाने को ।।
परागित हो कली मुखरित हमीं को मुँह चिढ़ाती है ।
पवन पुरवा सुहानी हाय ! तू मुझको सताती है ।।

गुलाबों के सरिस मेरे अधर तुमको बुलाते हैं ।
पिया मेरे बड़े निष्ठुर नहीं क्यों लौट आते हैं ।।
चकोरी साँझ से ही टकटकी नभ में लगाती है ।
पवन पुरवा सुहानी हाय ! तू मुझको सताती है ।।

तृषित मन आज मेरा प्रेम का तेरे हुआ जाता ।
कहाँ जाऊँ दिखाऊँ घाव जो मन को दुखा जाता ।।
स्वयं करुणा रुदित होकर विरह के गीत गाती है ।
पवन पुरवा सुहानी हाय ! तू मुझको सताती है ।।

🌻---------🌻

वफ़ा

आज कल कौन ज़माने में वफ़ा करता है ।
तोड़ कर दिल को सरेआम ख़ता करता है ।।

ख़ून से सींच जिसे हमने उगाया यारों ।
हर्फ़ दर हर्फ़ जिसे ख़ूब सजाया यारों ।।
गुल दगाबाज़ वही हमसे दगा करता है ।
आज कल कौन ज़माने में वफ़ा करता है ।।

नोंच कर फेंक दिया जिसको था बिराने में ।
हम को सदियाँ न लगीं उस को फ़िर खिलाने में ।।
आज गुलज़ार हुआ हमको फ़ना करता है ।
आज कल कौन ज़माने में वफ़ा करता है ।।

आज भी गीत तेरे लफ़्ज़ मेरे रहते हैं ।
तेरी ग़ज़लों को मेरे ज़ेरो ज़बर कहते हैं ।।
तू मेरी सुख़नगी का ख़याल अता करता है ।
आज कल कौन ज़माने में वफ़ा करता है ।।

तू मेरा हो न सका मैं तो तेरा हूँ हमदम ।
तेरी मर्ज़ी है मुझे पूज कि कर दे बेदम ।।

दिल मेरा शामो सहर रोज़ दुआ करता है ।
आज कल कौन ज़माने में वफ़ा करता है ।।

🌻---------🌻

उत्प्रेरण

साधना साहित्य की करते रहोगे यदि यहाँ ।
नित्य भाषामृत कलश भरते रहोगे यदि यहाँ ।।

तो सुनो उद्धार हिंदी का सकल होगा प्रिये ।
वेद मंत्रों के चरण धरते रहोगे यदि यहाँ ।।

प्राणियों के प्राण में नव प्राण भर दोगे सखे ।
भाव के निर्झर निरत झरते रहोगे यदि यहाँ ।।

नाद का आह्लाद केशव कीर्ति की उद्घोषणा ।
पाञ्चजन्यक घोष से सजते रहोगे यदि यहाँ ।।

काम कल्मष क्रोध मत्सर मोह माया क्षोभ सब ।
आप मिथ्या भाष को तजते रहोगे यदि यहाँ ।।

तो सुनो इहलोक में सत्कीर्ति पाकर सर्वथा ।
हाँ मिले बैकुण्ठ हरि भजते रहोगे यदि यहाँ ।।

प्रण सुनो 'उपमन्यु' का भी सार्थक होगा मृदुल ।
आप सब मिलकर सदा लिखते रहोगे यदि यहाँ ।।

🌻---------🌻

कश्मीर

कश्मीर है हमारा, कश्मीर है हमारा ।

कश्यप तपस्थली फिर, जागीर क्यों तुम्हारा ।

कुंभज सुदृढ़ बनाया, सहदेव पुत्र अविचल ।
कल्हड़ कृतित्व निर्झर, झेलम व सिंधु निर्मल ।।
फ़िरदौस की ज़मीं यह, प्राचीर है हमारा ।
कश्मीर है हमारा, कश्मीर है हमारा ।।

कुछ लूटपाट करने, आये कबाइली थे ।
मस्तक विदीर्ण करने, भेजे हुये छली थे ।।
तब शूरमा लिए कर, शमसीर ने हँकारा ।
कश्मीर है हमारा, कश्मीर है हमारा ।।

नाकों चने चबाए, तुमको अदम्य बल ने ।
फिर भी हमें सताया, तेरे कुछद्म छल ने ।।
क्यों बर्फ़ दूधिया में, बोते रुधिर तुम्हारा ।
कश्मीर है हमारा, कश्मीर है हमारा ।।

🌻---------🌻

नग़मा-ए-दिल

ईमानों को जगाना चाहता हूँ ।
दिल-ए-दर खटखटाना चाहता हूँ ।।

अदद भर सर्फ़रोशों को मिलाकर ।
अहंकार-ओ-बीमारी को मिटाकर ।।
नया भारत बनाना चाहता हूँ ।
दिल-ए-दर खटखटाना चाहता हूँ ।।

बुना था साज़िशों का जाल जिसने ।
मेरा गुलदान बिखराया वो किसने ।।
वही गुलशन खिलाना चाहता हूँ ।
दिल-ए-दर खटखटाना चाहता हूँ ।।

किये थे वार उसने पीठ पर जो ।

दिये धोखे हजारों बद'अतर जो ।।
उन्हें मैं भूल जाना चाहता हूँ ।
दिल-ए-दर खटखटाना चाहता हूँ ।।

मेरी राहों में काँटें बो गये जो ।
मेरे दुश्मन के दिल में खो गये जो ।।
गले उनको लगाना चाहता हूँ ।
दिल-ए-दर खटखटाना चाहता हूँ ।।

मेरी महफ़िल से सीखे थे अदब जो ।
हुये मेरे लिये ही बेअदब जो ।।
उन्हें फिर भी बनाना चाहता हूँ ।
दिल-ए-दर खटखटाना चाहता हूँ ।।

🌻---------🌻

व्यथित हृदय

चाह नहीं मैं अति प्रसिद्ध हो, दुनिया में तेरा कहलाऊँ ।
मैं छोटा ही बना रहूँ पर, जो भी हूँ मेरा कहलाऊँ ।।

हे ! कुत्सित मानस के स्वामी, कुटिल प्रपंच शकुनि अनुगामी ।
केशव की सुनीति के वंचक, हे पाखण्डी निर्मम वामी ।।
तेरी तलवारी जिव्हा से, अब मैं और न काटा जाऊँ ।
हे ! दुर्मति दुर्योधन वाली, अब मैं तुझको क्या अपनाऊँ ।।
चाह नहीं मैं अति प्रसिद्ध हो, दुनिया में तेरा कहलाऊँ ।।

दुश्चक्रों के विषम जाल में, तूने मुझे फसाया इतना ।
मैं टुकड़े-टुकड़े हो जाऊँ, है तूने उकसाया इतना ।।
लेकिन मैं अब तलक न समझा, अब मैं खुद को एकल पाऊँ ।
है बस अब तो मेरी पीड़ा, औषधि उसकी स्वयं बनाऊँ ।।
चाह नहीं मैं अति प्रसिद्ध हो, दुनिया में तेरा कहलाऊँ ।।

निश्छलता का मैंने सारा, अमृत अलौकिक तुझे पिलाया ।
लेकिन तूने निज स्वभाव वश, मुझको डंक विषाक्त दिलाया ।।
फिर भी मेरे हृदयान्तर से, मैं तेरे हित मधु हो जाऊँ ।
कैसे अब तुझको हे ! विषधर, मैं भी मीठा दूध पिलाऊँ ।।
चाह नहीं मैं अति प्रसिद्ध हो, दुनिया में तेरा कहलाऊँ ।।

🌻---------🌻

मजदूर

सिर्फ़ मजदूर दिवस भर न बताओ इनको ।
मिल के सब लोग उठो हक़ भी दिलाओ इनको ।।

कितने मजबूर हुये आज ये भूखों मरते ।
जोकि कर सकते नहीं काम ये वो भी करते ।।
भुखमरी फैल रही इससे बचाओ इनको ।
मिल के सब लोग उठो हक़ भी दिलाओ इनको ।।

अब किसानों की सुनों माँगें सभी बाज़िब हैं ।
वत्न ए शागिर्द यही हैं व यही तालिब हैं ।।
तेरी गद्दी के लिये अब न रुलाओ इनको ।
मिल के सब लोग उठो हक़ भी दिलाओ इनको ।।

देश में लाख युवा फ़िरते हैं रोज़ी ख़ातिर ।
लूटते शाह हज़ारों उन्हें बनकर शातिर ।।
हाय! अब और पकोड़े न तलाओ इनको ।
मिल के सब लोग उठो हक़ भी दिलाओ इनको ।।

इनकी मेहनत पे इमारत है खड़ी दुनिया की ।
फिर भी गुस्ताख़ नज़र चुभती बड़ी दुनिया की ।।
अब नहीं और अधिक नीचा दिखाओ इनको ।
मिल के सब लोग उठो हक़ भी दिलाओ इनको ।।

🌻---------🌻

प्रेम

प्रेम ढाई अक्षरों का शब्द है ।
यह अखिल ब्रह्मांड का प्रारब्ध है ।।

सृष्टि की उत्पत्ति का कारण यही,
प्राणि के कल्याण में शुचि प्रज्ञ है ।।

निखिल नीरव शुष्कता को सीचने,
गीतिका फल से निसृत रस नव्य है ।।

प्रेम अभिसिंचित हृदय की प्रेरणा,
से श्रजित आलोक कितना सभ्य है ।।

सृष्टि की परिकल्पना क्या प्रेम बिन,
अब तलक तिंहुँ लोक में अनुश्रव्य है ?

'नित्य' तुम भी प्रेम निर्मित सौम्यता,
इसलिये पग धूलि कितनी स्निग्ध है ।।

🌻---------🌻

उन्नति बनाम भुखमरी

फ़ैलती जा रही भुखमरी है, आप कहते कि उन्नति हुयी है ।

दौर मँहगाइयों का बढ़ा है, मौत का भी बिगुल बेसुरा है ।
आर्थिक युद्ध ऐसा अनोखा ,दिख रहा हर तरफ़ सिर्फ धोखा ।
आग सीमाओं पर भी लगी है ,आप कहते कि उन्नति हुयी है ।

आज कोविड मिटाता जनों को, बन्द भी है सताता जनों को ।
है बुरे हाल में जन सुरक्षा, कम हुयी राजनीतिक तितक्षा ।
ऑक्सीजन तलक घट रही है, आप कहते कि उन्नति हुयी है ।

रोमियो के विरोधी बने तुम, लैला-मजनूँ के रोधी बने तुम ।
प्रेम प्रतिबंध तुमने लगाया, कृष्ण-राधा तलक को रुलाया ।
इतना प्रतिबन्ध कब लाज़मी है, आप कहते कि उन्नति हुयी है ।

नोटबन्दी ने जनगण हिलाया, कालाधन लौट फिर भी न आया ।
आज नीरव व माल्या अडानी, लूटते देश का माल पानी ।
झोपडों में ग़रीबी पड़ी है, आप कहते कि उन्नति हुयी है ।

सब किसानों जवानों दुकानों, टपरियों, गाँव के घर मकानों ।
टैक्स भरना बहुत है ज़रूरी, है विकासों में अब कुछ ही दूरी ।
देवि उत्पाद शुल्का खड़ी है, आप कहते कि उन्नति हुयी है ।

दोगुनी आय पाते किसानों, वस्तु उत्पाद देती दुकानों ।
टैक्स भरते हुये वीर भानों, और तलते पकौड़े जवानों ।
सबने ख़ुद ही चुनी बेवसी है, आप कहते कि उन्नति हुयी है ।
🌻---------🌻

महबूब

क्या वज़ह है याद आयी लरज़ते रुख़सार की ।
वो न मिल पायी मुझे पर लत बुरी दीदार की ।।

हौसलों में जान फूँकें मुस्कुराना आपका,
चल पड़ा हूँ आज होने मैं दीवाना आपका,
दिल बिछा दूँ हो जहाँ भी रहगुज़र दिलदार की ।
वो न मिल पायी मुझे पर लत बुरी दीदार की ।।

बे-तकल्लुफ़ हो सके वह आसमां से आ रही,
वो परी है गेसुओं को अब्र से नहला रही,
हाथ में चन्दा सितारोंदार छड़ है प्यार की ।
वो न मिल पायी मुझे पर लत बुरी दीदार की ।।

रस्में वादे तोड़ कर वह इस ज़मीं पर आएगी,
मेरे छूते ही मचल कर नाज़िनी इतरायगी,
ज़िस्म उसका मरहमी दर्दे दवा बेज़ार की ।
वो न मिल पायी मुझे पर लत बुरी दीदार की ।।

बोलती तर्ज़-ए-तरन्नुम ज्यों ग़जल उपमन्यु की,
रौशनी ज्यों दूधिया नफ़्स-ए-असल उपमन्यु की,
बात जैसे कह रही हो आलिया इख्तियार की ।
वो न मिल पायी मुझे पर लत बुरी दीदार की ।।

🌻---------🌻

मेरे हुज़ूर

मेरे हुज़ूर तुम सा ज़माने में कौन है ।
मैं ढूँढता यहां पे बिरानें में कौन है ।।

गेसू न हैं कि काँधों पे बदली घिरी हुयी ।
लब हैं कि मैक़दे की रुआवत बनी हुयी ।
सरबत ए हुश्न रोज़ पिलाने में कौन है ।
मेरे हुज़ूर तुम सा ज़माने में कौन है ।
मैं ढूँढता यहां पे बिरानें में कौन है ।।

जी चाहता बिठा दूँ तुम्हे माहताब में ।
बेज़ार हूँ अभी न मिलो बेहिजाब में ।।
आँखों सी शोख़ झील डुबाने में कौन है ।
मेरे हुज़ूर तुमसा ज़माने में कौन है ।
मैं ढूँढता यहां पे बिरानें में कौन है ।।

आग़ोश में तुम्हें जो लिया क्या सितम किया ।
मगरूर ज़ुल्फ़ खोल दी मदहोश कर दिया ।।
मस्ती में आगये तो लुटाने में कौन है ।
मेरे हुज़ूर तुमसा ज़माने में कौन है ।
मैं ढूँढता यहां पे बिरानें में कौन है ।।

मुस्तैद हम रहे हैं ग़में ज़िन्दगी लिए ।
मैकश न हैं लज़ीज़ लबे ज़ाम हैं पिए ।।
जो लड़खड़ा गये तो उठाने में कौन है ।।
मेरे हुज़ूर तुमसा ज़माने में कौन है ।
मैं ढूँढता यहाँ पे विरानें में कौन है ।।

🌻---------🌻

(1)

आओ न यहाँ बैठो हम नीति सुनाते हैं ।
प्रभु कीर्ति सुनों गाओ सदग्रंथ बताते हैं ।।

दुखियों के कलेजों में ठन्डक की दवाई दो,
हिंदुत्व यही होता सब संत सुझाते हैं ।

औरों के लिये जीना है धर्म बड़ा सबसे,
क़ुरआन भी कहता है वेदान्त भी गाते हैं ।

नंगा न बचे कोई सोये न कोई भूखा,
तब धर्म बनें सच्चा बाक़ी तो दिखाते हैं ।

हम लाख करें पूजा मस्जिद में अज़ानें दें,
ग़र 'नित्य' मनुज भूखे क्या मूर्ति जिंवाते हैं ।

🌻---------🌻

(2)

वो जब से दिल में उतर गये हैं ।
हम और भी कुछ सँवर गये हैं ।।

मिज़ाज में है अजीब शोख़ी,
उसी में खोकर बिख़र गये हैं ।

कली हज़ारों हैं गुलशनों में,
मग़र उन्हीं पर ठहर गये हैं ।।

अशआर मेरा हुआ मुख़ातिब,
पढ़ा तो कितना निखर गये हैं ।

गुलाब की पंखुड़ी मुक़म्मल,
मश्रण पे मेरे अधर गये हैं ।

वहीं हैं अब तक जहाँ मिले थे,
इधर गये ना उधर गये हैं ।

है 'नित्य' उनका इलाज़ ही क्या,
जो मर गये या मुकर गये हैं ।

🌻---------🌻

(3)

मुझे जब वो नज़दीक पाती न होगी ।
ख़ुशी कोई उसको भी भाती न होगी ।।

भले जन्नतों की मिली होगी मिलक़त,
मगर एक पल भी सुहाती न होगी ।।

निकलती भले सैर करने को घर से,
नज़र पर ज़मी से उठाती न होगी ।।

कभी ख़्वाब में मुझसे दो चार होकर,
अँधेरों में जा शर्म खाती न होगी ।।

घिरी ख़ूब वो अपने दर्दे ज़िगर में,
किसी को मग़र वो बताती न होगी ।

दुखी मन को अपने रिझाने के ख़ातिर,
वो तस्वीर दिल से हटाती न होगी ।।

बहुत 'नित्य' छुपछुप के होगी वो रोती,
मगर हाँ किसी को सुनाती न होगी ।।

🌻---------🌻

(4)

मैं आज़ भी मुफ़ीद भले कातिलों में हूँ ।
था मैं नहीं रक़ीब ज़रा मुश्किलों में हूँ ।।

कहते हैं लोग सुख़नवर मुझको अज़ीब है,
मुझको पता है ख़ूब अभी काइलों में हूँ ।।

जिस रोज़ आप झूम के गाएँगे नज़्म को,
तब कह सकूँगा मैं भी अभी साहिलों में हूँ ।।

ख़ुद्दार हूँ रक़ीब से माँगूँ क़त'आ नहीं,
कुछ दूर भर बचा हूँ हद-ए-महफ़िलों में हूँ ।।

रौशन जहान आज़ तेरी रौशनी से है,
कुछ रोज़ रुक चराग़ मैं चराफ़लों में हूँ ।।

🌻---------🌻

(5)

इस क़दर कुछ आप जो शरमा गये,
उफ़ नशेमन पर हमारे छा गये।

शोख़ आँखे शरबती वो आपकी,
तुम डुबो करके हमें नहला गये ।

तुम नज़र का तीर बनकर जानेजां,
धस कलेजे को मेरे दहला गये ।

आँधियों से झूझ कर निकले थे हम,
आप फिर तूफ़ान बनकर आ गये ।

लब तुम्हारे मैक़दे गुलज़ार से,

रोशनाई सुर्ख़ सी बिखरा गये ।

गेसुओं की छाँव में जीवन सुखद,
तुम इशारों में हमें बतला गये।।

'नित्य' तुम मेरे बनोगे ग़र नहीं,
सोच कर हम तो फ़क़त घबरा गये ।

🌻---------🌻

(6)

हमें आप से कुछ शिक़ायत नहीं ।
असल में है इसकी ज़रूरत नहीं ।।

ग़रीबों की हैं बस्तियाँ कुछ मलिन,
जहाँ रौशनी की रवायत नहीं ।।

जो कहते थे अच्छे दिनों के लिये,
दिखा उनमें भी कुछ निहायत नहीं ।।

किसानों की कब दोगुनी आय हो,
अजी अब रही कुछ अक़ीदत नहीं ।।

कहां कुछ मिला अहले आवाम को,
निज़ामों में अब वो शराफ़त नहीं ।।

अजब नौनिहालों के हालात हैं,
वो सीखे हुनर में किफ़ायत नहीं ।।

करों से रहे मुक्त सांसद मग़र,
मिली सैनिकों को रियायत नहीं ।।

जिन्हें रोटियों तक के लाले यहाँ,
ग़रीबी में उनकी सदाक़त नहीं।।

नये 'नित्य' कानून गढ़ते हैं वो,
जिन्हें टूटने से अदावत नहीं ।।

🌻---------🌻

(7)

रौशनी है न आफ़ताब है तू ।
कैसे बोलूँ की लाजवाब है तू ।।

अहमियत भी नही कहीं तेरी,
फिर भला कौन सा ख़िताब है तू ।।

तुझमें इंसानियत नहीं है जब,
ज़िंदगी के लिए अज़ाब है तू ।।

रब्त तुझसे नहीं रहा लेकिन,
फिर भी मेरा हसीन ख़्वाब है तू ।।

प्यास बुझती है मेरी बस तुझसे,
क़तरा-क़तरा हुयी चनाब है तू ।।

'नित्य' हद से गुज़र गया होता,
शुक्र है आज बा-हिजाब है तू ।।

🌻---------🌻

(8)

तेरे काश्तकारों पे अब तो रहम कर ।

मुक़द्दर के मारों पे अब तो रहम कर ।।

तुझे मरहमी रौशनी चाहिये तो,
ज़रा चाँद तारों पे अब तो रहम कर ।।

ये गुरबत के मारे ऋणों में दबे हैं,
वतन के सहारों पे अब तो रहम कर ।।

अरे ! छुप गया तू है क्यों उनके पीछे,
ऐ गुल सख़्त खारों पे अब तो रहम कर ।।

वतन से मुहब्बत जिन्हें सबसे ज़्यादा,
उन्हीं ख़ाक़सारों पे अब तो रहम कर ।।

शहादत से जिनके मिटी है गुलामी,
तू उनकी मज़ारों पे अबतो रहम कर।।

मिटे 'नित्य' जो राष्ट्र पर राष्ट्रधर्मी,
तू उनके दयारों पे अब तो रहम कर ।।

🌻---------🌻

(9)

मैंने गुरूर-ए-मर्ज़ सा अज़गर नहीं देखा ।
इसकी पकड़ को हमने बेअसर नहीं देखा ।।

खुद्दार कौम हम हैं क़भी झुक न सकेंगे,
हम से न झुक गया वो कहीं सर नहीं देखा ।।

माना कि जोरदार सिकंदर सरेजहां,
पौरुष पे जोर उसका रंचभर नहीं देखा ।।

जो लूटपाट लाख सहे वत्न न हारे,
उन शौर्य साधकों सा क़लन्दर नहीं देखा ।।

तलवार से ज़हान झुकाया तो नहीं पर,
भारत सा कहीं प्रेम समंदर नहीं देखा ।।

बेदाग़ ज़िन्दगी को जिया है न किसी ने,
पर दागियों को देश का रहबर नहीं देखा।।

मैं 'नित्य' शीश ग़र न झुकाता ,
संसार में वतन सा वफ़ागर नहीं देखा ।।

🌻---------🌻

(10)

रोग जिनको इश्क़ वाला लग गया है ।
मुफ़्त वो दीवानगी में लुट चुका है ।।

प्यार में जिनको नहीं होता यक़ी तो,
बे वज़ह ही जिन्दगी में वह जिया है ।।

प्यार में जो भी लुटा वह तो ख़ुशी थी,
वास्तव में लुट न पाया वह लुटा है ।।

प्रेम की गलियाँ बड़ी ही त्याग मय हैं,
मतलबी है वह न जो इनमें बसा है ।।

आशिक़ों में नाम है बदनामियाँ पर,
इश्क़ से कोई बताओ जो बचा है ।।

रेत में भी क्यारियाँ गुलज़ार करता,
इश्क़ से ही यह ज़माना ख़ुशनुमा है।।

प्रेम ही तो 'नित्य' राधा रुक्मिणी का,
कृष्ण जैसे ईश पर भारी पड़ा है ।।

🌻---------🌻

(11)

वो जो महबूब के पहलू में फ़ना होते हैं ।
मौज़ु ए इश्क़ के किरदार ए वफ़ा होते हैं ।।

उनके आगोश में पाने को ज़रा सी मिलक़त,
मिट गये लाख मग़र फिर भी ज़दा होते हैं ।।

राजदारों ने हमें ख़ूब मिटाया लेक़िन,
हम रक़ीबों के कहाँ रुख़ से ख़फ़ा होते हैं ।।

जिस्म पे ओढ़ लिया कर न क़भी ऐ दिलबर,
हम हबीबों के लिये लुफ़्त-ए-शिफ़ा होते हैं ।।

नर्म मरहम न सही ख़ार की सख़्ती हममें,
ख़ार ही गुल के लिये दुर्ग-ओ-क़िला होते हैं ।।

हमने तरज़ीह जिन्हें थोड़ी सी देना चाहा,
रूठ कर आज वही हमसे ज़ुदा होते हैं।।

खाक़सारों पे रहम आज़ तो कर दे थोड़ा,
'नित्य' फ़ानूस वही दौर-ए-कज़ा होते हैं ।।

🌻---------🌻

(12)

हैं आप जो क़रीब मग़र नेहिज़ाब है ।
बेक़ल चकोर दिख न रहा माहताब है ।।

आओ सनम चलेंगे मोहब्बत की राह में,
बेफ़िक्र हो पियेंगे भले ही अज़ाब है ।।

रुसवा हुए हैं आज़ हक़ीक़त यही हुई,
तुमसे गिला नहीं ये मुक़ाबिल शबाब है ।।

खुद्दार कारचाफ़ चलो मिल गया मुझे,
कपड़े नहीं ये मेरा दिले लाज़बाब है ।।

होठों की तेरे नर्मियाँ महसूस कर रहा,
साँसों में घुल रहा वो मुक़द्दस गुलाब है ।।

सब छोड़ आज आप यहाँ पास बैठिये,
यह प्यार का तिलिस्म सुनो बेहिसाब है।

अब 'नित्य' पी रहा हूँ लब-ए-मैकादों से मैं,
यह ख़ूब जानता हूँ नवेली शराब है ।।

🌻---------🌻

(13)

चला वुहान से आया है क्या लगा उसको ।
बहुत विकल है ज़माना कहूँ मैं क्या उसको ।।

वबा बना है सरेआम क़त्ल करता है,
किया दुखी है सभी को तो क्या मिला उसको ।।

ग़ुरूर टूट ही जायेगा एक दिन उसका,
रुको अभी न कहूँगा मैं कुछ बुरा उसको ।।

थमा कभी का वो होता मगर चुनावों में,
अज़ीब बात हुयी जो के दम मिला उसको ।।

मेरे अजीज़ कई दफ़्न हो रहे अबतो,
सुहागनों को उजाड़ा तो क्या मिला उसको ।।

क़रीबियों को मिटा देख ग़म बहुत होता,
मग़र है मृत्य सदा सत्य यह बता उसको ।।

अरे ओ 'नित्य' नई क़ब्र खोदते लोगों ,
सुधर भी जाओ न हो भीड़ दो मिटा उसको ।।

🌻---------🌻

(14)

अपने इस अहल-ए- वतन पर जो फ़िदा हो जाएगा ।
इस चमन में बस उसी का क़ायदा हो जाएगा ।।

ख़ुद की हस्ती को मिटाना सबके बस में है नहीं,
मिट सका ग़र तो वही फिर नाख़ुदा हो जाएगा ।।

आज़ कलियां हैं परागित चूमते कितने भ्रमर,
जब ख़िज़ाँ आयेगी तब भँवरा ज़ुदा हो जाएगा ।।

है हमारी माँ का अहोदा इस जहां उच्चतर,
क़र्ज़ क्या इस जन्म में उनका अदा हो जाएगा ।।

खून में मेरे महक है इस वतन की ख़ाख की,
ख़ाख में मिलकर इसी की यह फ़ना हो जाएगा ।।

ज़ख्म मेरे दिल में कोई सूखता सा था मग़र,
शाज़िसाना हरक़तों से फ़िर हरा हो जाएगा ।।

खोके मिट्टी में वतन की 'नित्य' गुल बनकर खिलो,
तब वतन महबूब मेरा ख़ुशनुमा हो जाएगा ।।

🌻---------🌻

(15)

आपने लूट क्या बड़ी कर ली ।
अहले ईमां से बेरुख़ी कर ली ।।

जो तुम्हें रख रहा था पलकों पर,
आपने उससे दुश्मनी कर ली ।।

मैं तो दीवानगी की हद तक था,
ख़ुद ही जल कर के रोशनी कर ली ।।

रास ईमान परसती न हुई,
तो बईमां से दोस्ती कर ली ।।

तुम बड़े दिलफ़रोश दुश्मन थे,
मैंने दुश्मन से आशिकी कर ली ।।

टूट बिखरा हमारा दिल जो सही,
सोच अब हमने कुछ नयी कर ली ।।

'नित्य' दर्दे ज़िगर नहीं जिनको,
कौन सी उनने शाइरी कर ली ।।

🌻---------🌻

(16)

आपके दर पे आया भिखारी हूँ मैं ।

मेरे कान्हा तुम्हारा पुजारी हूँ मैं ।।

हूँ सुदामा नहीं उनसे कम भी नहीं,
इस जगत के दुखों से दुखारी हूँ मैं ।।

अपने पापों की गठरी लिये काँख में,
हूँ छुपाता महामूर्ख भारी हूँ मैं ।।

अश्रु बहते तुझे देख कर साँवरे,
करता मन की दशा व्यक्त सारी हूँ मैं ।।

माँ यशोदा के लल्ला चले आइये,
ब्रह्म हो तुम कि आत्मा बिचारी हूँ मैं ।।

तुमसे बिछड़ी हुई ज्योति की रश्मि हूँ,
तुम जलधि हो मेरे बून्द खारी हूँ मैं ।।

इस जगत ने बहुत मुझको धोखे दिये,
'नित्य' हो तुम मेरे अब तुम्हारी हूँ मैं ।।

🌻---------🌻

(17)

तुम्हें भी ग़ैर से ग़र प्यार होगा ।
हमें मर के भी वो दुस्वार होगा ।।

किसी से छीनना फ़ितरत न मेरी,
मग़र तुम हो तो फिर स्वीकार होगा ।।

अज़ब सी दिल में उलझन इक बसी है,
तुम्हें पाकर हृदय गुलज़ार होगा ।।

अभी तक संकुचित थी सोच मेरी,
मिलोगी तब कहीं विस्तार होगा ।।

ख़ुदा भी आपको माँगे जो मुझसे,

नहीं दूँगा भले बेज़ार होगा ।।

मुक़द्दस हैं गुलाबी होंठ दोनों,
जो रखवाली करेगा ख़ार होगा ।।

नहीं बरसे अग़र तुम तिश्नगी में,
हमारा दिल मुक़म्मल थार होगा ।।

मिलीं ग़र आप हमको ख़्वाबों में भी,
हमारा दिल उमड़कर ज्वार होगा।।

तुम्हें मिलना है ये दिल 'नित्य' खोकर
तभी जाकर सपन साकार होगा ।।

🌻---------🌻

(18)

कहता मैं सरेआम मेरे यार ज़मीं पर ।
कमबख़्त हुआ आज़ मुझे प्यार ज़मीं पर ।।

आओ न दिले ज़श्न यहाँ रोज मनायें,
हम आप बनें रोज गुल'ओ ख़ार ज़मीं पर ।।

ख़ुश ख़ूब रहो शम्स यहाँ रोज बताता,
है ग़म का नहीं कोई तलबगार ज़मीं पर ।।

कुछ सोच समझ करके रहो आप हो भोले,
दुनिया है हुयी हुस्न का बाज़ार ज़मीं पर ।।

है नित्य बनाओ न फ़साना वो सुहाना,
मतलब के नहीं हम हैं तलबगार ज़मीं पर ।।

🌻---------🌻

(19)

लो आज पुनः बिलखाता सुधि आई है अम्मा की ।
यह याद बहुत ही मुझको दुखदाई है अम्मा की ।।

पीड़ा की सुईयाँ चुभतीं मेरे मन के मोती में,
कानों में वाणी मधुरिम मुस्काई है अम्मा की ।।

मन प्लावित सरिता बनता आँखों से पिघल-पिघल कर,
पावन प्रांजलता मन की परछाई है अम्मा की ।।

पर मैं अति दुष्ट अपावन रह गया दूर चरणों से,
ममता तरंगिणी रोकर बतलाई है अम्मा की ।।

हे ! करुणामय शिव भोले ममता की गङ्गा देदो,
मुझको पहाड़ करती वो लघुताई है अम्मा की ।।

धरती पर देव वही है मंदिर उसके बिन सूना,
दुनिया में सबसे सुंदर प्रतिमाई है अम्मा की।।

उपमन्यु आज रोता है ममता को बिलख बिलख कर,
मुझ अंकुर को पय देती करुणाई है अम्मा की ।।

🌻---------🌻

(20)

अज़ीब यह क्या कहीं न तक़रार हो रही है ।
असल शियासत यहीं पे बेकार हो रही है ।।

लड़ें न मुस्लिम लड़े न हिन्दू न और कोई,
बिसात सारी बिछा के भी हार हो रही है ।।

विकास हमनें सदैव चाहा उन्हें न भाया,
अभी तलक भी ज़हन की यलगार हो रही है ।।

वही सिखाते हमें सलीक़ा जिन्हें न ख़ुद है,
बसा न घर अब तुम्हीं से सरकार हो रही है ।।

हैं बोल ऐसे सुई चुभा के दिलों को तोड़ें,
कुछ एक जिनकी ज़बान तलवार हो रही है।।

बिखर बिखर के जुड़े जो हमसे किसी फ़लक से,
उन्हें हमारी कहन नहीं अब यहाँ पे स्वीकार हो रही है।।

गज़ब उसी देश को वो तोड़ें बसे हैं जिसमें,
सुना है जबसे ये जान बेज़ार हो रही है ।।

🌻---------🌻

(21)

आ गयी है याद मुझको यार की ।
देख तासीरें बदलती प्यार की ।।

मुंतसिर है दिल मेरा उनके लिए,
दरअसल यह रस्म है इख़्तियार की ।

वो पुरानी ताज़गी दिलकश हँसी,
जिस्मोजां में छा गयी दिलदार की ।।

झुक गयी थी देखकर मुझको ग़ज़ब,
क्या अदा थी यार के रुख़सार की ।।

आज तक मदहोशियाँ छायीं हुईं,
तिश्नगी समझा करो बेज़ार की ।।

आशिक़ी है आज जिस्मानी फ़क़त,
थी पुरानों की नफ़स अनवार की ।।

'नित्य' तुमको पा लिया हूँ ख़ुशनुमा,
तुम दवा हो दिल मेरे बीमार की ।।

🌻---------🌻

(22)

बमुश्किल हुआ मैक़शी का सफ़र है ।
हुआ आशिक़ी का वो मुझपे असर है ।।

बड़ी बेवज़ह ज़िन्दगी शुष्क थी जो,
मुहब्बत में तेरी हुयी तर-ब-तर है ।।

वो दो नैन तेरे भरे मय के प्याले,
न पीता अगर तो न होती गुज़र है ।।

अज़ब आपने जो मिलाई है मुझसे,
असर कर गयी हाय तीरे नज़र है ।।

ज़माने में कितने मुहब्बत पे पहरे,
मगर प्रेमियों को न उसकी फ़िकर है ।।

ज़माने के हूँ मैं निशाने पे लेकिन,
भरोसे का मेरे न गिरता शज़र है।।

मैं हूँ 'नित्य' प्यासा पपीहा पुकारूँ,
पिला दो ज़रा स्वाति की बूँद ग़र है ।।

🌻---------🌻

(23)

वतन में अमन है तुम्हारे ही दम ।।
सदा नेक रखना तुम अपने करम ।।

जवानों कदम डगमगायें नहीं,
यही आपका है मुकद्दस धरम ।।

न दुश्मन के पैरों तले हो ज़मीं,
सही वक्त है छोड़ निकलो हरम ।।

मिटे जिसपे थे चंद्र शेखर भगत,
उसी देश को तू बना अब सनम ।।

मैं हूँ 'नित्य' तेरे लिए ऐ वतन,
सदा दुश्मनों के मैं तोड़ूँ भरम ।।

🌻---------🌻

(24)

सीप मुँह खोले हुए है बूँद तो आए सही ।
बनके के मोती जाएगी वो खुदको समझाए सही ।।

छोड़ कर अपना समंदर है किनारे पर खड़ी,
दूसरों की क़द्र इतनी कौन कर पाए सही ।।

मुत्मईन है बूँद आएगी बनेगी एक दिन,
राब्ता उस बूँद से सूरज ही करवाए सही ।।

छोड़ देगी ख्वाहिशें जो साँप के मुँह जाने की,
बूँद वह मोती बनेगी इल्म अजमाए सही ।।

ख़ुद की हस्ती को मिटा देना पड़ेगा बूँद को,
तब कहीं वागेश्वरी साधना पाए सही ।।

स्वार्थ के साधक बहुत हैं विश्व में खोजो नहीं,
वह तुम्हें खुद ढूँढ़ लेंगे गंध मिलजाए सही।।

'नित्य' सीपी साँप कदली की तरह हैं गुरु बहुत,
यह मुनस्सर बूँद पर जो भी उसे भाए सही ।।

🌻---------🌻

(25)

महबूब ! मत नफ़स के अनवार को भुला दो ।
तुझे जो कभी किया था मेरे प्यार को भुला दो ।।

सुनो मैं नहीं कहूँगा तुम्हें बेफफा कभी भी,
मेरी ज़ानेजां भले तुम दिले ज़ार को भुला दो ।।

तू है अब्र मैं हूँ प्यासा सरेआम कह रहा हूँ,
यूँ करो न कुछ कि मेरे एतेबार को भुला दो ।।

रहा आज़ तक अकेला तेरी बेरुखी का मारा,
मुझी प्यार के फ़रिश्ते मुख़्तार को भुला दो ।।

जो था 'नित्य' हाँ तुम्हारा ग़मे ज़िंदगी में रहबर,
किसी मातहत सुनो तुम उसी यार को भुला दो ।।

🌻---------🌻

(26)

खिला-खिला गुलाब तुम हुज़ूर बेमिसाल हो ।
उतर गयीं हो जानो ज़िस्म में मेरे कमाल हो ।।

बजूद खो गया मेरा निग़ाह आपकी पड़ी,
अजीब मौन तोड़ के तड़प उठा बेहाल हो ।।

वो सुर्ख़ सुर्ख़ लब तेरे गुलाब पंखुड़ी खिलीं,
पराग की मधुर पिपास जग उठी निढाल हो ।।

सुने जो मद भरे बयन चहक बहक उठा हृदय,
लहक उठे पिहू नयन उमड़ पड़े ज्यूँ प्याल हो ।।

नई-नई मुहब्बतें हैं 'नित्य' के लिए ग़जल,
विहग हूँ प्यास उर लिये न हुस्न का उबाल हो ।।

🌻---------🌻

(27)

अधर रसीले बँसुरिया पे ज्यों लगाता है ।
मेरा पिया वो मधुर राग रस लुटाता है ।।

उड़े गुलाल अबीरों में आज मधुवन ज्यों,
मदन को मोह महावेणुगान गाता है ।।

करोड़ काम उसे देखकर लजाते हैं,
वो कृष्ण वर्ण नया सप्त रंग पाता है ।।

खिला हो इंद्रधनुष अम्बुदों में ज्यों कोई,
उसी प्रकार मेरा कृष्ण मन लुभाता है ।।

उधर नवेली चली सज सँवर के श्री राधा,
पकड़ कलाई कन्हैया उन्हें नचाता है ।।

कपोल लाल किये हैं गुलाल मल-मल के,
कि अंग-अंग सरस प्रेम रँग भिगाता है ।।

हैं 'नित्य' देख रहे आज सब चराचर भी,
कृपा पयोधि आज प्रेम सरि नहाता है ।।

🌻---------🌻

(28)

कन्हाई हाय मुझे रंग यों लगाता है ।
पकड़ के बांह मेरी बेबजह सताता है ।।

मुझे पता है कि तू है बड़ा छली सैंया,
बुला हमें न कभी बाँसुरी सुनाता है ।।

तेरे अधर पे अधर जो धरे हैं मुरली के,
यही पिपास विवर में हमें डुबाता है ।।

वो बाँसुरी ही तो है सौत असल में मेरी,

अधर लगा तू जिसे मेरा दिल जलाता है ।।

मुझे अज़ीब हुई श्याम से मुहब्बत क्यों,
जो बांसुरी से बंधा है न छोड़ पाता है ।।

कभी समझ न सका जो दिले जज़्बातों को,
वो रोज दर्श सदा ख़्वाब क्यों दिखाता है।।

निसार "नित्य" मेरा दिल हुआ कन्हैया पर
जिन्हें कभी न याद प्यार मेरा आता है ।।

🌻---------🌻

(29)

मुनाफ़े का सौदा मोहब्बत हमेशा ।
नहीं काम आती है दौलत हमेशा ।।

अज़ब सोच में आप क्यों पड़ गये हैं,
अजी छोड़ दो यह हिक़ारत हमेशा ।।

पशोपेश में ज़िन्दगी है हमारी ,
न उम्मीद करना शराफ़त हमेशा ।।

बहाने बनाओ नहीं आप मुझसे,
बहानों की होती बुरी गत हमेशा ।।

वो बर्बाद हो मिट गये हैं जहां से,
जिन्होंने निभाई अदावत हमेशा ।।

मेरी ज़िंदगी में तुम्हीं एक आयी,
जची मुझको जिसकी नज़ाकत हमेशा ।।

हिफ़ाजत वतन की जो ‘उपमन्यु’ करते,
वो यादों में रहते सलामत हमेशा ।।

🌻---------🌻

(30)

सादगी मेरी का वो आज गिला करता है ।
छोड़कर उफ़ वो मुझे इश्क़ अता करता है ।।

नस्र मुझको हबीब तेरी मोहब्बत कब थी,
दिल मेरा फिर भी तुझे याद बड़ा करता है ।।

तोड़कर आप मेरा दिल न निकल पाये हो,
दिल के हर किर्च में वो रूप दिखा करता है ।।

साथ में रातें गुज़ारी थीं कभी जो जिसके,
अब नहीं ख़्वाब तलक में वो मिला करता है ।।

मेरा महबूब मुझे जान से ज़्यादा फिर भी,
क्योंकि महफ़िल में नया काम किया करता है ।।

नेकियाँ याद तुम्हें आज नहीं हैं मेरी,
पर ज़माना तो मेरा नाम लिया करता है।।

'नित्य' मिटकर भी उसे हम न कभी भूलेंगे,
बज़्म में मुझको वो बदनाम कहा करता है ।।

🌻---------🌻

(31)

मज़ा मिलता तुम्हें क्या दिल्लगी में ।
हमारी जान जाती है इसी में ।।

मैं तुमको रात दिन यूँ ताकता हूँ,
तुम्हें आता मज़ा क्यों बेरुखी में ।।

तेरे आने से इतनी ख़ुशनसीबी ,
मैं गाता गीत हूँ जिंदादिली में ।।

मुझे है याद वो दिन आज तक भी,
गुजारे साथ जो दीवानगी में ।।

छुपी आग़ोश में मेरे सिमट कर,
न जानें क्या दिखा था छिपकली में ।।

तुम्हें हमदम बना के मिट गये हम,
न जाने क्या मिला आवारगी में।।

कहाँ तुम 'नित्य' खोई हो न जाने,
क्या मैं ही हूँ तुम्हारी बेक़ली में ।।

🌻---------🌻

(32)

बहुत ग़म भर गया है ज़िन्दगी में ।
बुझी सी लग रही है लौ जली में ।।

भलाई का ज़माना अब कहाँ है,
बुराई बढ़ गयी है हर गली में ।।

हमेशा हमनें ख़ुशियाँ ही लुटाईं,
मैं हँसता आज भी हूँ बेक़ली में ।।

ख़ुदारा मान भी ले मेरा कहना,
दुखा मत दिल किसी का दिल्लगी में ।।

खड़ा जो मैं लिये हूँ नेक नामी,
बुज़ुर्गों से मिली है बन्दग़ी में ।।

नहीं हमने किसी को ग़र सताया,
मिलेगा ग़म भला क्यों आख़िरी में ।।

हमें है 'नित्य' पूरा यह भरोसा,
सुकूं मुझको मिलेगा पेशगी में ।।

🌻---------🌻

(33)

मैं नहीं आज कुछ गुनगुना पाऊँगा ।
दर्द दिल का नहीं अब सुना पाऊँगा ।।

होंठ ही जल रहे मुस्कुराने से हैं,
फिर गिला किसको अपना सुना पाऊँगा ।।

रौशनाई ख़तम आज़ सूरज की है,
हूँ दिया क्या भला तम मिटा पाऊँगा।।

दर्दे-दिल इस क़दर बढ़ गया आज़ तो,
मरहमों का सुकूं क्या भुला पाऊँगा ।।

रंज अब तक सहे हैं हज़ारों तेरे,
एक अब और क्या बे-वज़ा पाऊँगा।।

मेरे दिल ने तुम्हें कितना चाहा मग़र,

बे-वफाई क्या तुमसे निभा पाऊँगा।।

'नित्य' कितना मुझे और तड़पाओगे,
दर्द गाया बहुत अब न गा पाऊँगा ।।

🌻---------🌻

(34)

मैं उन्हें अपने दिल में बिठाके चला ।
खूब रोया मग़र मुस्कुराके चला ।।

लुट गया अंजुमन आज दिल का मेरे,
जो रहा सिर्फ उसको बचा के चला ।।

छोड़ कर चल दिए आप मुझको सनम,
था ये आसां नहीं फिर भी गाके चला ।।

टुकड़े दिल के समेटे बिखरते हुए,
बोझ उनका अकेले उठा के चलो ।।

दोष तेरा नहीं या कि मेरा कोई,
जश्न रुसवाइयों का मना के चला ।।

मैं तुम्हें बे-मुरब्बत तो कह सका,
बेफफ़ा आज़ खुद को बना के चला ।।

है हुआ 'नित्य' रुसबा तेरे इश्क़ में,
बेवज़ह तुमको दिल से लगा के चला ।

🌻---------🌻

(35)

ग़जल

सलोने श्याम की बंशी सुनी तो आ गया हूँ मैं।
कन्हैया रूप जो मधुरिम दिखा तो बावरा हूँ मैं।।

हजारों रानियाँ पटरानियाँ घेरे उसे घर में ,
मुझे वह ढूंढ़ता क्यों है? कहो क्या, राधिका हूँ मैं।

सलोना साँवरा मेरा मदनमोहन हठीला है,
सभी को छोड़ मेरे पास है इठला रहा हूँ मैं।

सभी ने देह से कान्हा पकड़ रक्खा भले होगा,
बना इक अंश से उसके सुनो सच, आत्मा हूँ मैं।

सुनो सबको बताता हूँ सुदामा नाम है मेरा,
कन्हैया चेतना मेरी, उजाला श्याम का हूँ मैं।

पढ़े हम साथ, संदीपनि महात्मा गुरु हमारे हैं,
चुराकर कृष्ण हिस्से के चने तक भी चबा हूँ मैं।

सुदर्शन चक्र धारी कृष्ण मेरे बाल साक्षी हैं,
उन्हीं वृजराज श्री नृप द्वारिका का प्रिय सखा हूँ मैं।

✍🏾
नित्यानन्द वाजपेयी 'उपमन्यु'

🌻---------🌻

(36)

नमो चन्द्रघंटा नमो मात अम्बे ।
सुरों साधु इत्यादि की त्रात अम्बे ।।

दुखों ने यहाँ आज सबको सताया,
कि जैसे अँधेरी हुई रात अम्बे ।।

तेरे भक्त को दो उजाले ख़ुशी के,
मिटा दो दुखों की ये औक़ात अम्बे ।।

उठा शूल को दैत्य का नाश कर दे,
मिटा शत्रु की दे बुरी जात अम्बे ।।

ख़ुशी के कमल दल खिला दे जहां में,
बनेगी तभी तो मेरी बात अम्बे ।।

मिटा रोग संसार का हे! भवानी,
दिखादो तुम्हारी करामात अम्बे।।

हमें आप पर 'नित्य' हो तब भरोसा,
जगत में सुखों की हो बरसात अम्बे ।।

🌻---------🌻

(37)

फिजां में गुल खिलाना चाहता हूँ ।
मैं ख़ुद को फिर लुटाना चाहता हूँ ।।

गज़ल तुम पर सुनाना चाहता हूँ,
मैं ख़ुद को आजमाना चाहता हूँ ।।

बनी हो तुम रूहानी रुक्न लेकर,
तुम्हें अब गुनगुनाना चाहता हूँ ।।

मेरे दिल के न छेड़ो तार दिलबर,
ये नाज़ुक हैं बताना चाहता हूँ ।।

मुझे आग़ोश में अपने छिपा लो,
मैं तुम में डूब जाना चाहता हूँ ।।

बहुत दिन से सँभाला दिल ये हमनें,
तुम्हें इसमें बिठाना चाहता हूँ ।।

'नित्य' बेदर्द दुनिया है सितमगर,
तुम्हें इससे चुराना चाहता हूँ ।।

🌻---------🌻

(38)

चौकिदारी सर फ़रोशाना ज़रूरी है ।
पर रज़ा जनतंत्र की पाना ज़रूरी है ।।

मुतमइन हूँ तोड़ दे सर अब मेरा पत्थर,
पर ज़रा पत्थर ज़मीराना जरूरी है ।।

है कहाँ कपड़ो कि आदत इन ग़रीबों को,
पेट घुटनों से लिपट जाना ज़रूरी है ।।

मुफ़लिसों पर कब सियासत ग़ौर है करती,
जबकि उनपर ग़ौर   फ़रमाना   ज़रुरी है ।।

गाँव की हालत कहाँ सुधरी वही सड़कें,
गुण विकासों के फ़क़त गाना ज़रूरी है ।।

दे रहीं फ़ुटपाथ पर ही जन्म बच्चों को,
जननियों की कद्र करवाना ज़रूरी है ।।

जिनके हल्के में कोई फ़ुटपाथ पर जन्में,
डॉक्टरों पर हो वो ज़ुर्माना ज़रूरी है ।।

रोज़गारों के लिए फिरते युवा बेदर,
अब पकोड़ों को भी तलवाना ज़रूरी है ।।

स्याह दौलत अब क़यामत तक न आयेगी,
नोट बंदी करके धमकाना ज़रूरी है ।।

ऑक्सीजन घट रही है अस्पतालों में,
पीपलों के पेड़ लगवाना ज़रूरी है।।

'नित्य' मौसम है चुनावी दौर का फ़िर से,
अब दबी लाशों उठो आना ज़रूरी है ।।

🌻---------🌻

(39)

इश्क़िया दिल है इसे रोना ज़रूरी है ।
प्यार में तन्हाइयां होना ज़रूरी है ।

रोज़ आते हैं मेरे बेबाक़ दिल में जो,
फ़ूल उनकी राहों में बोना ज़रूरी है ।।

हम नफ़स से दूरियाँ कैसे रखें कह दो,
ज़िश्म भी है दूरियाँ खोना ज़रूरी है ।।

शम्स अँधियारा अभी तक चीरता था जो,
नूर उसका चाँद में होना ज़रूरी है ।।

होंठ की सुर्खी बुलावा दे अगर मुझको,
तेरे दिल में इक मेरा कोना ज़रूरी है ।।

हो गयी शादी हमारी राज कन्या से,
रोज कपड़े हमने अब धोना ज़रूरी है।।

नित्य अब तो आशिक़ाना हो गये हम भी,
आबे ज़मज़म में ये दिल धोना ज़रूरी है ।।

🌻---------🌻

(40)

आपसा बेख़बर नहीं देखा ।
मैं खड़ा था उधर नहीं देखा ।।

मैं लगा था तो ख़ैर मक़दम में,
फिर भी तुम पर असर नहीं देखा ।।

लूट कर आप चल दिये हमको,
रह गया था वो ज़र नहीं देखा ।।

मुझ में तब भी ईमान बाक़ी था,
आज भी है लचर नहीं देखा ।।

झुक गया आँधियों में जो बिल्कुल,
टूटता वो शजर नहीं देखा ।।

दिल में रहकर न देख पाए कुछ,
तुमसा कम तर नज़र नहीं देखा ।।

'नित्य' दीपक क़रीब था तेरे,
तूने उसका हुनर नहीं देखा ।।

🌻---------🌻

(41)

होकर वो किसी ग़ैर में तर देख रहे हैं ।
हम और बची है जो कसर देख रहे हैं ।।

जिनको सजा सँवार निखारा है हमीं ने,

वो ग़ैर में अब अपनी सहर देख रहे हैं ।।

हम ने तो लुटा प्यार दिया आँख न खोली,
वो हैं कि मतलबों कि फ़िकर देख रहे हैं ।।

जिनपे था भरोसा नहीं ग़द्दार बनेंगे,
हम आज उन्हीं में वो असर देख रहे हैं ।।

देकर के घनी छाँह हज़ारों को जहां में,
हम वक़्त की रहमत का शजर देख रहे हैं ।।

इंसान हुये आज मतलबी व दिखावी,
ख़ुदग़र्ज़ बने बिन न बसर देख रहे हैं ।।

जब चाह हमें थी तो मुड़े और कहीं वो,
अब 'नित्य' मुझे शामो सहर देख रहे हैं ।।

🌻---------🌻

(42)

दामन वो जिनकी छाँव थी अब चाक हो गये ।
इस क़द्र इरादे तेरे नापाक़ हो गये ।।

तुमने निगाहे मस्त से देखा तलक नहीं,
हम इश्क़ में तेरे ही सनम ख़ाक हो गये ।।

मैं हूँ मुफ़ीद तुम न मिलीं ठीक ही हुआ,
जो मिल चुके हैं तुम से कहाँ पाक हो गये ।।

अब मैं न रोज़ रोज़ तेरी दीद को रुकूँ,
मेरे भी हौसले बड़े बेवाक़ हो गये ।।

हम याद में तुम्हें ही हमेशा सजा-सजा,
मजनूँ की तर्ह इश्क़ियों में धाक हो गये ।।

जब इश्क़ ही मिला न तुम्हें ज़िन्दगी में तो,
फिर आप बज़्मे हुस्न में बे-नाक हो गये ।।

मैं नित्य ज़ार-ज़ार हुआ घूमता रहा,
लो आप ग़ैर के लिये मुश्ताक़ हो गये ।।

🌻---------🌻

(43)

अब नहीं आदमी रहे हैं सब ।
रब्ते शैतानगी रहे हैं सब ।।

ढूंढ़ते फ़ायदा स्वयं का ही,
बन के ख़ुदग़र्ज़ जी रहे हैं सब ।।

कौन प्याला निहारता ख़ाली,
जो भरे उनको पी रहे हैं सब ।।

साक़ियों में कहाँ बचा कोई,
अब तो कमज़र्ब ही रहे हैं सब ।।

मैक़दे छोड़ना पड़ा मुझको,
अब कहाँ रिंद भी रहे हैं सब ।।

हमने कितने ग़लीज़ पाले हैं,
मेरे सुख से दुखी रहे हैं सब।।

'नित्य' अब ख़ुद पे है भरोसा बस,
ख़ून ही पी के जी रहे हैं सब ।।

🌻---------🌻

(44)

कभी कहीं ग़र हो भूल हमसे तो आप मुझ पे यक़ीन रखना ।
अगर डराए तुम्हें ज़माना क़सम से ख़ुद पे यक़ीन रखना ।।

अभी अग़र जो न आ सके हैं मिलेंगे आकर ज़रूर इक दिन,
भरी मुहब्बत है मेरे दिल में ज़रूर इस पे यक़ीन रखना ।।

अज़ीब हैं आप रो पड़े क्यों हमारी उल्फ़त में कुछ कमी क्या,
बड़ी ज़लालत हैं झेलते हम हमारे ग़म पे यक़ीन रखना ।।

मुक़द्दरों का है खेल यह तो के आपसे दूर हम हुए हैं,
तुम्हारी यादों में रोज़ जलते मेरी जलन पे यक़ीन रखना ।।

उदास होकर न बैठिएगा हमें तुम्हारी फ़िकर बहुत है,
कभी छुईं थी तुम्हारी जुल्फ़े उसी छुअन पे यक़ीन रखना ।।

तुम्हें जो चाहा है ज़िन्दगी में नहीं किसी से यूँ प्यार होगा,
अज़ीब चाहत हुई है तुमसे मेरी लगन पे यक़ीन रखना।।

ये सोच लो तुम हमारे हमदम हूँ 'नित्य' तेरा सदा सदा से,
तपिस हमारी है आफ़ताबी इसी तपन पे यक़ीन रखना ।।

🌻---------🌻

(45)

रेत के तपते समंदर में खज़ाना ढूँढ़ता हूँ ।
मैं वबा के दौर में कुछ आबदाना ढूँढ़ता हूँ ।।

लुट गयी ज़ागीर खुशियों की जहां में इस क़दर अब,
जून दो भर रोटियों का मेहनताना ढूँढ़ता हूँ ।।

थक गया अरदास करके इस अखिल ब्रह्मांड से मैं,
देव, दानव या मनुज कुछ रहमताना ढूँढ़ता हूँ ।।

मैं जहां की बादशाहत माँगता कब हूँ बता तो,
मैं फ़कीरा ज़िंदगी का ताना-बाना ढूँढ़ता हूँ ।।

मिल गया जो आज तक उसपर तसल्लीबख्श होकर,
अब वही दिलदार मेरा क़ातिलाना ढूँढ़ता हूँ ।।

इस जहां में मौत की खेती उगाई है किसी ने,
कौन है वह विश्व द्रोही शातिराना ढूँढ़ता हूँ।।

या मेरे रहबर ख़ुदारा या मेरे ग़मख़्वार रब्बा,
'नित्य' तेरी बन्दग़ी का इक बहाना ढूँढ़ता हूँ ।।

🌻---------🌻

(46)

अगर तू उससे मिला करेगा ।
तो दिल हमारा दुखा करेगा ।।

ज़माना तोहमत भले लगाये,
ये दिल तेरा आसरा करेगा ।।

बहुत ज़ियादा कहूँ क्या तुमसे,
मिलीं नहीं तो गिला करेगा ।।

जुदाई तुम से सहेगा कैसे,
सिसक-सिसक कर हँसा करेगा ।।

अगर ख़ुदा भी चुरा ले तुमको,
ख़ुदा से भी हौसला करेगा ।।

तुम्हारी रुख़सार झुकी-झुकी सी,
दिखी तो फिर मर मिटा करेगा ।।

न नित्य पूछो के चाँदनी में,
बदन तेरा क्या खिला करेगा ।।

🌻---------🌻

(47)

आज तेरा मन कहाँ है ।
कंपकंपाता तन कहाँ है ।।

फेंक कर मारा जो उसको,
हाथ का बर्तन कहाँ है ।।

गाल फूले हैं अभी तक,
मिल न पाया मन कहाँ है ।।

दुख रहा होगा अभी भी,
आपका बेलन कहाँ है ।।

मार खा कर रो न पाया,
गुमशुदा साजन कहाँ है ।।

ग़ाफ़िलों में नाम जिसका,
दर्द का अध्ययन कहाँ है ।।

रोज सब्ज़ी काटता वो,
आपका तर्पण कहाँ है ।।

झूठ तारीफ़ों का दरिया,
डर गया दर्पण कहाँ है ।।

'नित्य' तेरी ज्वाल झुलसे,
रूप का निर्धन कहाँ है ।।

🌻---------🌻

(48)

खिल उठा मधुवन कहाँ है ।
मन का वृंदावन कहाँ है ।।

ढूंढता बाहर जिसे तू,
सौम्य अंतर्मन कहाँ है ।।

हैं अँधेरे इस जहां में,
चन्द्र का नर्तन कहाँ है ।।

प्रेम की पीड़ा मिटाने,
कृष्ण मधुसूदन कहाँ है ।।

बाँसुरी की ध्वनि सुनाता,
मेरा मनमोहन कहाँ है ।।

आज जग में त्रासदी है,
मुस्कुराता मन कहाँ है ।।

धर्म संस्थापित करो अब,
श्याम तेरा प्रण कहाँ है ।।

हे ! महा प्रभु कंस हंता,
दुष्ट मर्दक फ़न कहाँ है ।।

'नित्य' जग विपदा विनाशक,
कृष्ण तू इस क्षण कहाँ है ।।

🌻---------🌻

(49)

अपने दिल में किसी को बसाओ ।
प्यार का आशियाना सजाओ ।।

है मुहब्बत में दुनिया समाती,
ज़िन्दगी में मुहब्बत निभाओ ।।

दिल की दहलीज़ का दीप है जो,

उसको ताउम्र तुम जगमगाओ ।।

मुझको रोना था महफ़िल में लेक़िन,
हुक़्म आया है तुम मुस्कुराओ ।।

अब वतन के हैं हालात बेवश,
साथ इक दूसरे का निभाओ ।।

दौर वैश्विक महामारियों का,
आक्सीजन तो सबको दिलाओ ।।

बेबसी का सबब है जहां में,
अब तो नेता जी तुम बाज़ आओ ।।

सरहदों पे है बरसात खूं की,
इसको बन्दूकों से मत मिटाओ ।।

इन चुनावों के कारण सुनो तुम,
आग से आग को मत बुझाओ ।।

तुमने ख़ुद ही बिगाड़ा है सबकुछ,
दूसरों पर न इल्ज़ाम लाओ ।।

आइना झूठ कब बोलता है,
ज़ोर तुम चाहे जितना लगाओ ।।

झूठ व्यापारियों अब समझो,
कुछ तो बाज़ार में भाव लाओ।।

तुम बग़ीचे हो बागवां भर,
'नित्य' मालिक न ख़ुद को बताओ ।।

🌻---------🌻

(50)

वो मेरे दर्द की दवा क्यों है ।
फिर भला ग़ैर की बता क्यों है ।।

जब नहीं है वो मेरे हिस्से में,
दिल मेरा उसको चाहता क्यों है ।।

ज़िन्दगी ग़म का इक समंदर जब,
दिल ख़ुशी उसमें ढूँढ़ता क्यों है ।।

छाले देगीं जो तेरे पाँवों को,
जूतियाँ ऐसी पहनता क्यों है ।।

साँझ की सुरमयी छटा देखी,
हुस्न की यूँ हुयी अदा क्यों है ।।

मिट गये सारे गिले शिकवे जब,
तू पता उसका पूछता क्यों है ।।

जानता है कि रब दिलों में है,
फिर भी पत्थर को पूजता क्यों है ।।

तेरे जैसा नहीं मिला फिर भी,
'नित्य' तू रोज ख़ोजता क्यों है ।।

🌻---------🌻

(51)

वतन का दर्द मिटाने की बात करता हूँ ।

मैं तुमसे फर्ज़ निभाने की बात करता हूँ ।।

बहुत है ज़द्दोज़हद आज देश में अपने,
सभी की जान बचाने की बात करता हूँ ।।

घरों में आप के रहने से सब सही होगा,
वबा का दौर मिटाने की बात करता हूँ ।।

अभी कुछ एक दिनों में सुधार आएगा,
हुक़ूक सब को दिलाने की बात करता हूँ ।।

उदास रात है दिन भी उदास रहता है,
यही तो बात भुलाने की बात करता हूँ ।।

पढ़े चरित्र हजारों हैं मैंने दुनिया में,
किसी को ऊँचा उठाने की बात करता हूँ ।।

हैं 'नित्य' मेरी दुआएँ मिलें सभी को जा,
किसी का दिल न दुखाने की बात करता हूँ ।।

🌻---------🌻

(52)

बस गयी मन में तू ही ख़्वाबों ख़यालों की तरह ।
है तेरी याद की ख़ुशबू भी गुलाबों की तरह ।।

बारहा आज मुझे ज़ुल्फें तेरी याद आईं,
जो कि बिखरीं थी मेरे तन पे फुहारों की तरह ।।

वो जो उस रोज़ तेरे पाँव के नीचे आया,
फूल वो अब भी सँभाले हूँ सितारों की तरह ।।

तुम मुझे देख लिया करतीं हो चुपके-चुपके,
मैं तुम्हें देखता रहता हूँ नज़ारों की तरह ।।

हम तेरे नक़्शे नज़र पर ही ग़ज़ल लिखते हैं,
तू ही दिखती मेरी ग़ज़लों में शबाबों की तरह ।।

मैं लिपट जाऊँ तेरे मरहमी दामन से अभी,
ऐ शमाँ मुझको बना दे तू शरारों की तरह ।।

मैं तो दस्तक़ ही दिया करता था दिल पर तेरे,
रह गयी तू तो मेरे दिल में बहारों की तरह ।।

आशिक़ों में है मेरा नाम तेरे ही सदके,
छा गयी तू भी मेरी 'नित्य' मिसालों की तरह ।।

🌻---------🌻

(53)

बेवफ़ा को फिर यहाँ रहबर बनाया जायेगा ।
रेत पर लिख कर उसे पत्थर बनाया जायेगा ।।

अब गुलिस्तां ख़ाक हो यह साज़िशें हैं बेबज़ह,
फिर जहाँ को आग का निर्झर बनाया जायेगा ।।

एक जैविक युद्ध पहले दे दिया है विश्व को,
हिन्द को आतंक का अब घर बनाया जायेगा ।।

द्वीप जम्बू को बना शमशान अपने स्वार्थ में,
प्रेम के महलों को फ़िर खँडहर बनाया जायेगा ।।

आणुविक परमाणुविक हथियार सारे छोड़कर,
इस धारित्री को ज्वलित दिनकर बनाया जायेगा ।।

इस से पहले हों तेरे मंसूबे हाशिल खामखां,
ग़र्क ख़्वाबों का तेरे मंजर बनाया जायेगा ।।

अब नहीं बाँसठ सी हालत है हमारे देश की,
जंगियों को अब तेरे बन्दर बनाया जायेगा ।।

रोक कर हर शहर में उत्पाद तेरा बेचना,
आर्थिक दर को तेरी क़मतर बनाया जायेगा ।।

'नित्य' मौसम है समर का आज़ फिर से ग़ौर कर,
जंग को अब रक्त का सागर बनाया जायेगा ।।

🌻---------🌻

(54)

मुहब्बत निभाने के दिन आ गए हैं ।
मिलने मिलाने के दिन आ गए हैं ।।

चलो छेड़ दें एक दिलकश सा नग़मा,
सनम को लुभाने के दिन आ गए हैं ।।

बहुत रोज़ बीते उन्हें हमने देखा,
कि नज़रें मिलाने के दिन आ गए हैं ।।

कि आरिज़ पड़े ख़ुश्क हैं तिश्नगी में,
उन्हें फिर भिगाने के दिन आ गये हैं ।।

मुक़द्दर हमारा बहुत ही हसीं है,
लो ख़ुशियाँ मनाने के दिन आ गए हैं ।।

अलक से फ़लक तक वही दिख रही है,
जिसे आज पाने के दिन आ गए हैं ।।

समंदर में नदियाँ समाने भी दो अब,
कि प्यासें बुझाने के दिन आ गए हैं ।।

अजी दूर जाओ न अब यूँ मुक़र के,
कि आग़ोश आने के दिन आ गये हैं ।।

चलो 'नित्य' उनको सजाएँ सँवारें,
फ़लक पे बिठाने के दिन आ गए हैं ।।

🌻---------🌻

(55)

हौसला क्यों फ़ना हो गया ।
ताज़्जुब क्या से क्या हो गया ।।

जो हमेशा रहे लूटते,
आज़ उनसे दगा हो गया ।।

मौज़ फ़िर आएगी कुछ ठहर,
गरचे साहिल किला हो गया ।।

इस क़दर बेवज़ह रो न दिल,
ग़ैर था जो जुदा हो गया ।।

चोट खाई अगर छत गिरी,
हुज़रा मज़बूत सा हो गया ।।

जो नफ़स है नहीं मिट सका,
ज़िस्म था वो क़ज़ा हो गया ।।

'नित्य' पकड़ो कलेजा नहीं,
इतना कुछ क़्या बड़ा हो गया ।।

🌻---------🌻

(56)

हाय ! यह आज क्या हो गया ।।
उनसे फिर सामना हो गया ।।

मैं गया छोड़ उसका शहर,
फ़िर भी उसको गिला हो गया ।।

घाव खाए उसी से बहुत,
ज़ख्म फिर इक नया हो गया ।।

खूँ हमारा लबों पे लिये,
लो उन्हें मैं दवा हो गया ।।

माँगता मौत था जो मेरी,
आज़ मुझपे फ़िदा हो गया ।।

लफ्ज़ जिसके सुखाते थे खूँ,
ख़ूब अब मुब्तिला हो गया ।।

जिसने बोया ज़हर ख़ूब था,
पेड़ वो अब सुधा हो गया ।।

मैं न था उनके जैसा मग़र,
आज वह 'नित्य' सा हो गया ।।

🌻---------🌻

(57)

ऋतु शरद कितनी सुहानी भा रही ।
हर जवाँ दिल की रज़ा हुलसा रही ।।

गरमियों से ऊबकर भागी खिज़ा,
लू गयी ठण्डी लहर हरषा रही ।।

अब उमस बरसात की भी खो गयी,
कंबलों में रोशनाई गा रही ।।

सम्स ने भी कुछ नरम कर दी अदा,
और कुब्बत धूप की कुम्हला रही ।।

अब अलावों के किनारे बैठ कर,
शेख़चिल्ली की कहानी छा रही ।।

भूलकर शिक़वे गिले अब गाँव में,
खिलखिलाहट धूप में इठला रही ।।

सर्दियों में गुनगुना सा ले बदन,
नेह पाने सरि जलधि को जा रही ।।

🌻---------🌻

(58)

चलो आपके रुख़ से पर्दा उठा दूँ ।
किए ज़ुल्म हम पे वो सब को बता दूँ ।।

तेरे इश्क़ में हम लुटे इस क़दर हैं,
है ज़ख्मी दिलोजां कहो तो दिखा दूँ ।।

निग़ाहों के जो तीर दिल में धसे हैं,
बना कर कुसुम तेरे गेसू सजा दूँ ।।

मुहब्बत में जो घाव तुमनें दिए हैं,
उन्हें तेरी राहों का मखमल बना दूँ ।।

तुझे ज़िंदगी में दिये ग़म किसी ने,
कहो तो दिवारों में उसको चुना दूँ ।।

फ़लक से अभी तोड़ लाऊँ कहो तो,
तेरी माँग में कुछ सितारे सजा दूँ ।।

मुहब्बत में हूँ 'नित्य' दीवाना तेरी,
कि क़दमों में तेरे ज़माना झुका दूँ ।।
🌻---------🌻

(59)

तुम महज़ नासूर बनते जा रहे ।
माँग कर मेरे ज़िगर को खा रहे ।।

तोड़ कर मेरे हृदय की तीलियाँ,
बाज़ुओं में ग़ैर के इठला रहे ।।

ख़ून की तासीर ऐसी आपकी,
हम नहीं फ़िर भी कहीं बतला रहे ।।

मतलबी मासूम क़ातिल हो मेरे,
ज़िस्म जाँ में आज़ तक भी छा रहे ।।

जा मेरे महबूब ख़ुश रहना सदा,
बो गई खंज़र वो अब तक पा रहे ।।

ऐ ! फ़रेबी विष ख़ुरानी हुश्नग़र,
हम दुआयें 'नित्य' देकर जा रहे ।।

🌻---------🌻

(60)

तेरी दरिया दिली से डरते हैं ।
अपनी आवारगी से डरते हैं ।।

हम तेरे प्यार में हुये पागल,
अब तेरी बेरुख़ी से डरते हैं ।।

मुझको प्यासा समझ लिया तुमने,
हम तेरी तिश्नगी से डरते हैं ।।

अब नहीं खौफ़ मौत का हमको,
हाँ बची ज़िन्दगी से डरते हैं ।।

तोड़ कर रख दिया मेरे दिलको,
तेरे दिल की लगी से डरते हैं ।।

फ़िर किसी मोड़ पर मिलें हम तुम,
हम उस जिंदादिली से डरते हैं ।।

एक दरिया ग़मों का है दिल में,
अब हरेक ग़म ज़दी से डरते हैं ।।

'नित्य' मौसम बहार लाया पर,

हम फ़िज़ा की बदी से डरते हैं ।।
🌻---------🌻

(61)

वीराना कर बैठ गया है ।
उल्लू जिस घर बैठ गया है ।।

रोका हमने कितना लेकिन,
मन मेरे डर बैठ गया है।

आयी देखो ग़म की आँधी,
सर पर बिस्तर बैठ गया है।

कल तक मैं जिसके मन में था,
दुश्मन होकर बैठ गया है।।

आज अज़ब कुछ रोग चला है,
साहस रोक बैठ गया है।।

'नित्य' अकेले चलो अभी तुम,
मन यह कहकर बैठ गया है।

🌻---------🌻

(62)

मैं जिसे रूठकर मनाता हूँ ।
उससे कुछ तो है जो निभाता हूँ ।।

क्या पता कौन सी कवायद है,
रूठ कर जो उसे सिखाता हूँ ।।

मेरी रूठन उसे ख़ली होती ,
ग़र जो थोड़ा भी मैं सुहाता हूँ ।।

ऐसे पत्थर से सिर लड़ा मेरा,
उठके अब तक मैं लड़खड़ाता हूँ ।।

दर्द सीने में है बहुत लेक़िन,
फिर भी सबको यहाँ हँसाता हूँ ।।

चीख़ता ज़ोर से मैं रोने को,
उनको लगता मैं खिलखिलाता हूँ ।।

वो जो वादा किया था दिलबर से,
इस लिये 'नित्य' मुस्कुराता हूँ ।।

🌻---------🌻

(63)

मुझमें जलने की आस रहने दो ।
तुम मुझे आसपास रहने दो ।।

तुम शमा हुस्न की यक़ी मेरा,
तुम में घुलने की प्यास रहने दो ।।

रौशनी तुम से है ज़माने में ,
दिल में मेरे उजास रहने दो ।।

मैं रहा आज़ तक दरो बेदर,
अब मुझे अपना ख़ास रहने दो ।।

'नित्य' बहता रहा तुम्हीं में तो,
फ़िर भी ग़र हूँ उदास रहने दो ।।